सावन में शिव की हो गयी तीन सौ युवा बहनें, समर्पण समारोह में अभिभावक भी उपस्थित

आबू रोड, क– जुलाई, निसं। सावन मास परमात्मा भोलेनाथ शिव का मास माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि परमात्मा शिव की दिल से पूजा अराधना करने से सहज ही प्रसन्न हो जाते है। परन्तु यदि सावन मास में जब परमात्मा शिव को ही अपना वर बना ले तो इससे अच्छा और €या हो सकता है। ऐसा ही कुछ हुआ ब्रह्माकुमारीज संस्था के शांतिवन में जब देश के कोने कोने से आयी तीन सौ युवा बहनें अपने जीवन की डोर परमात्मा शिव को सौंपकर संस्थान में समर्पित हो गयी। इस अवसर पर उनके माता पिता और नाते रिश्तेदार भी उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में आये हजारों लोगों को स बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज संस्था की संयुक्त मु य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कह कि यह जीवन कई जन्मों से उǯाम है। जिसके जीवन में स्वयं परमात्मा का वास हो जाता है वह हमेशा के लिए बुराईयों से मुक्त हो जाता है। परमात्मा की तन मन धन से सेवा करने के लिए आजीवन समर्पित होना महान पुण्य का कार्य है। कार्यक्रम में कार्यक्रम प्रबन्धिका बीके मुन्नी युवा बहनों से आह्वान किया कि वे जीवन में उच्च आदर्श मूल्यों को धारण कर महान बने और दूसरों के लिए प्रेरणादायी बनें।

इस अवसर पर संस्था के महासचिव बीके निर्वैर ने कहा कि हमारी बहनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि नारी चाहे तो विश्व को बदल सकती है। किसी भी कुरीति और बुराईयों को समाप्त कर सकती है। ये बहनें खुद का सकारात्मक बदलाव करते हुए समाज का बदलने में कामयाब होगी। संस्थान के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, शांतिवन प्रबन्धक बीके भूपाल, बीके अमीरचन्द समेत कई लोगों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये।

€या है समर्पण: ब्रह्माकुमारीज संस्था के स पर्क में आने के बाद कम से कम पांच साल तक प्रशिक्षु के तौर पर राजयोग मेडिटेशन के साथ संस्था की नियमों पर स पूर्ण रूप से चलने वाली बहनों का समर्पण होता है। जिसमें उनके माता पिता की भी सहमति होती है। इसके लिए पूरी तरह से शादी की अलौकिक रस्में निभायी जाती है।

सेवा स्थानों पर होता है स्थानान्तरण: समर्पण के बाद पूरी संस्थान देशभर में फैले सेवाकेन्द्रों पर चली जाती है। वहॉ रहकर जीवन की तरक्की करते हुए दूसरों की सेवा में तत्पर रहती है। उनकी स पूर्ण जि मेदारी संस्थान की होती है।

भव्य स्वागत: इस समारोह के दौरान बैंड बाजों तथा उन्हें पीली चुन्नियों में सजाकर उनका भव्य स्वागत किया गया। जिसमें उनके माता पिता तथा परिवार के लोग भी शरीक हुए।

शपथ समारोह: कार्यक्रम के बीच समर्पण के दौरान समर्पित होने वाली बहनों को अपने लक्ष्य और अपने श्रेष्ठ कर्म लिए उनसे प्रतिज्ञा करायी जाती है। जिससे की वे अपने लक्ष्य में कामयाब हो सके।

फोटो, क–एबीआरओपी, क, ख, फ, ब, भ कार्यक्रम का उदघाटन करते अतिथि, शपथ लेती युवा बहनें, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देते कलाकार